BA Part-I H
Paper-1

Principles of Sociology.

समूहों का वर्गीकरण (Classification)

From -
Dr. Ram Kumar
Reader
Dept of Sociology
Shershah College
Sasaram.

Date
21-August-20
Friday

समूहों के वर्गीकरण के संबंध में अनेक आधारों का प्रयोग विभिन्न विद्वानों द्वारा किया है जो निम्नलिखित है :-

- सदस्यों की संख्या के आधार पर - विद्वानों द्वारा समूह को छोटे तथा बड़े रूप में वर्गीकृत किया गया है मार्ग सिम्मेल - जॉनसन तथा होमन्स ने छोटे समूहों को समाज का आधार माना है। जबकि मैकाइवर एण्ड पेज राष्ट्र तथा जाति जैसे बड़े समूहों का उल्लेख करते हैं।

  स्थायित्व के आधार पर - समूह को दो भागों में विभाजित किया जाता है।

  (1) स्थायी समूह - जैसे परिवार नातेदारी समूह तथा शिक्षण संस्था आदि।

  (2) अस्थायी समूह - जैसे भीड़ श्रोता समूह इत्यादि।

  इन दोनों के बीच एक विशेष प्रकार का समूह पाया जाता है जिसे अर्द्ध समूह या आभासी समूह - जिन्सबर्ग तथा वोटोमोर कहते हैं। यह व्यक्तियों का ऐसा योग है जिसमें - संरचना अथवा संगठन का अभाव होता है। सामाजिक वर्ग प्रस्थिति, समूह, आयु और लिंग समूह इत्यादि अर्द्ध समूह के उदाहरण हैं।

- सम्नर एवं कैलर - ने समूह की प्रकृति व दृष्टिकोण के आधार पर मानव समूहों को दो श्रेणी में बांटा है

  (1) अंतःसमूह - यह समूह जिसके द्वारा हम सदस्य हैं जिसके प्रति हमारा मानसिक लगाव है। सदस्यों के प्रति सहानुभूति व हम की भावना पायी जाती है

  (2) बाह्य समूह - जिसके हम सदस्य नहीं होते जो हमसे बाहरी हैं।

Scanned by TapScanner

गिडिंग्स तथा गिलिन और गिलिन नामक विद्वानों ने समूहों को ऐच्छिक तथा अनैच्छिक समूहों के रूप में बाँटा है।

- इवाइट सैण्डरसन तीन प्रकार के समूह बताते हैं -
  (i) ऐच्छिक समूह - धार्मिक समूह, राजनीतिक समूह इत्यादि
  (ii) अनैच्छिक समूह परिवार, नातेदारी
  (iii) प्रतिनिधिक समूह - राज्यसभा, लोकसभा ग्राम पंचायत इत्यादि।
  जार्ज हासन - 4 प्रकार के समूह बताते हैं
  (i) असामाजिक समूह - जैसे - साधुओं का समूह
  (ii) समाज विरोधी समूह जैसे - गैंग
  (iii) समाज पक्षी समूह जैसे ए. जी. ओ.
  (iv) अभासी सामाजिक समूह - जैसे - राजनीतिक दल.
- मिलर, दो प्रकार के समूह का उल्लेख करते हैं -
  (i) उदग्र समूह - वे समूह जिनका निर्माण ऊँच नीच की भावना के आधार पर होता है।
  (ii) क्षैतिज समूह - वे समूह जिसमें सामाजिक दूरी की जगह - सामाजिक समानता के आधार पर संबंधों का निर्माण होता है।
- सी० एच० कूले सामाजिक समूहों को दो भागों में विभाजित किया है।
  (1) प्राथमिक समूह - वे समूह जो सर्वप्रथम निर्मित होते हैं जिनके व्यक्ति आरम्भ से ही सदस्य होते हैं।
  (2) द्वितीयक समूह - वे समूह जिसका निर्माण प्राथमिक समूहों के बाद होता है इनकी सदस्य संख्या अधिक होती है।
- मैकइवर दो प्रकार के समूह की बात करते हैं -
  (क) आकस्मिक समूह - आकस्मिक समूह वे समूह हैं जिनका निर्माण अचानक बिना किसी पूर्व योजना के अनुसार होता है।

Scanned by TapScanner

(ख) उद्देश्य मूलक समूह – का तात्पर्य उन समूहों से है जिनका निर्माण पूर्व योजनानुसार उद्देश्यों के अनुसार हुआ है। जैसे श्रोता समूह।

- जिसलिन व जिसलिन ने सामाजिक समूहों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया है।
  (क) रक्त संबंधी समूह – जाति एवं परिवार
  (ख) शारीरिक विशेषताओं संबंधी समूह – स्त्री पुरुष इत्यादि
  (ग) क्षेत्रीय समूह – जैसे जनजातीय समूह, राज्य, राष्ट्र
  (घ) अस्थायी समूह – भीड़ एवं श्रोतागण
  (ङ) स्थायी समूह – गाँव एवं शहर
  (च) सांस्कृतिक समूह – आर्थिक समूह, धार्मिक समूह, शिक्षा संबंधी समूह, मनोरंजनात्मक समूह –
- पार्क एवं बर्गेस ने छः प्रकार का समूहों का उल्लेख किया है
  (1) पारिवारिक समूह (2) भाषायी समूह – (3) प्रजातीय समूह (4) क्षेत्रीय समूह, (5) अनुकूलित समूह (6) संघर्ष समूह
- जे एच फिचटर (6) प्रकार के समूहों का उल्लेख करते हैं
  (1) पारिवारिक समूह (2) शैक्षणिक समूह (3) आर्थिक समूह (4) राजनीतिक समूह (5) धार्मिक समूह (6) मनोरंजनात्मक समूह
- आकार के आधार पर हरबर्ट हाईमन ने समूह को दो भागों में विभाजित किया है –
  (1) सहस्थता समूह (2) सदृश समूह
- चार्ल्स समूह की तीन विशेषताएं महत्वपूर्ण मानते हैं –
  (1) समता की चेतना (2) सामाजिक अन्तःक्रिया (3) सामाजिक संगठन

Prepared -
Dr. Arun Kumar
Reader
Dept of Sociology
Shershah College
Sasaram.

FRI – 21 · August – 20

Scanned by TapScanner